उत्तर प्रदेश के बुन्दलखण्ड क्षेत्र के ट्रांसजेण्डरों के सामाजिक–आर्थिक स्तर का तुलनात्मक अध्ययन

मनीष कुमार वर्मा
शोधार्थी (शिक्षाशास्त्र)
शिक्षा संस्थान
बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी।

डा० रश्मि सिंह
(असिस्टेंट प्रोफेसर)
शिक्षा संस्थान
बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी।

शोध सारांश :

प्रस्तुत शोध अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य उत्तर प्रदेश के बुन्देलखण्ड क्षेत्र के अंतर्गत ट्रांसजेण्डरों के सामाजिक–आर्थिक स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना था। प्रस्तुत शोध कार्य के लिए शोधार्थी ने बुंदेलखण्ड क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले 100 ट्रांसजेण्डरों का चयन किया। न्यादर्श का चयन आकस्मिक एवं उद्देश्य पूर्ण प्रतिचयन विधि से किया गया। प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। आंकड़ों के संकलन करने हेतु शोधार्थी द्वारा स्व–निर्मित ट्रांसजेण्डर सामाजिक–आर्थिक स्तर लिंकर्ट मापनी का प्रयोग किया गया। परिकल्पनाओं के विश्लेषण के लिए टी–टेस्ट का प्रयोग किया गया है। परिकल्पनाओं के विश्लेषण आधार पर पाया कि ग्रामीण एवं शहरी, अल्प शिक्षित व औसत शिक्षित ट्रांसजेण्डरों के सामाजिक–आर्थिक स्तर में अंतर पाया गया। अल्प शिक्षित ग्रामीण व अल्प शिक्षित शहरी ट्रांसजेण्डरों की सामाजिक–आर्थिक स्तर में अंतर पाया गया।

कुंजीभूत शब्द : सामाजिक–आर्थिक स्तर, ग्रामीण व शहरी ट्रांसजेण्डर एवं अल्प शिक्षित व औसत शिक्षित ट्रांसजेण्डर।

प्रस्तावना :

जेण्डर जैविक संरचना है इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता, लेकिन इनकी शैक्षिक, सामाजिक, आर्थिक, परिवारिक भूमिका का जब निर्धारण किया जाता है, तब इनके अपने

स्वतंत्र अस्तित्व पर प्रश्न अंकित हो जाता है। इसका जवाब जेण्डर देता है। हमें स्त्री, पुरुष व ट्रांसजेण्डरों की निर्धारित सीमा का परिभाषित करने और दुनिया क देखने के दृष्टिकोण की नाटकीय भूमिका को बताता है। वर्तमान समय में हम किसी भी व्यक्ति के बारे में जानना चाहते हैं। तब हम उसकी शिक्षा, व्यवसाय, आर्थिक, समृद्धि एवं सामाजिक दर्जा के आधार पर उसके बारे में आकलन करते हैं। व्यक्ति किस स्तर से संबंधित है। उसी के आधार पर हम उसके साथ पारस्परिक संबंध तालमेल रखते हैं। इस समाज में पुरुष, महिला, बच्चे, बुजुर्ग, ट्रांसजेण्डर आदि सभी वर्ग, धर्म, समुदाय, जाति से संबंधित लोग रहते हैं। इस भारतीय समाज में पुरुष एवं महिला को विकास के पर्याप्त अवसर व सम्मानजनक स्थान प्राप्त है। वहीं ट्रांसजेण्डर व्यक्तियों का जीवन में सतत संघर्ष है। इस रूढ़िवादी समाज में अपनी पहचान के लिए अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। ये कठिनाईयाँ परिवार से शुरू होकर उनके जीवन के अंतिम समय तक उनके साथ रहती हैं। टांसजेण्डर व्यक्तियों को ऐसा जीवन व्यतीत करना पड़ता है, जो उन्हें स्वयं पसंद नहीं होता है। वे मजबूर हैं, इस कार्य को करने के लिए, इसके अलावा उनके पास दूसरा कोई विकल्प नहीं है। ट्रांसजेण्डरों की वास्तविक जीवन की उपलब्धियों एवं अवसरों को जानने के लिए उनके सामाजिक–आर्थिक स्तर को जानना होगा। बालक/बालिकाओं एवं ट्रांसजेण्डरों के सामाजिक–आर्थिक स्तर पर **शुक्ला, रेखा (2011), शर्मा, सरोज कुमार (2012), कुमार, राजेश (2015), पाठक, प्रीति (2022), श्रीमोई,पोद्दार (2022)** आदि द्वारा अध्ययन किये गये हैं। लेकिन उत्तर प्रदेश क बुंदेलखण्ड क्षेत्र के अंतर्गत ट्रांसजेण्डरों के सामाजिक–आर्थिक स्तर पर अध्ययन नहीं किए गए हैं। इसी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए शोधकर्ता द्वारा प्रस्तुत विषय को शोध अध्ययन के लिए चुना गया।

समस्या कथन :

"उत्तर प्रदेश के बुन्दलखण्ड क्षेत्र के ट्रांसजेण्डरों के सामाजिक–आर्थिक स्तर का तुलनात्मक अध्ययन।"

समस्या कथन में प्रयुक्त चरों का परिभाषीकरण

ट्रांसजेण्डर– ट्रांसजेण्डर से आशय एक ऐसा वर्ग जो महिला पुरुष से अलग जैविक भिन्नता, संवेग रखते हैं। जिन्हें समाज में किन्नर, परलैंगिक, खोजा, हिजड़ा, नपुंसक आदि कई नामा से संबोधित किया जाता है।

सामाजिक–आर्थिक स्तर – सामाजिक–आर्थिक स्तर से आशय है कि किसी व्यक्ति के सामाजिक और आर्थिक रूप से स्थिति को प्रदर्शित करना है।

अल्प शिक्षित – कक्षा 1 से 5 तक शिक्षा प्राप्त ट्रांसजेण्डर।

औसत शिक्षित – कक्षा 6 से 12 तक शिक्षा प्राप्त ट्रांसजेण्डर।

अध्ययन के उद्देश्य

1. ग्रामीण व शहरी ट्रांसजेण्डरों की सामाजिक–आर्थिक स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. अल्प शिक्षित व औसत शिक्षित ट्रांसजेण्डरों की सामाजिक–आर्थिक स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. अल्प ि◌ाक्षित ग्रामीण व अल्प ि◌ाक्षित शहरी ट्रांसजेण्डरों के सामाजिक–आर्थिक स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. औसत ि◌ाक्षित ग्रामीण व औसत ि◌ाक्षित शहरी ट्रांसजेण्डरों के सामाजिक–आर्थिक स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएं

1. ग्रामीण व शहरी ट्रांसजेण्डरों की सामाजिक–आर्थिक स्तर में साथक अंतर नहीं है।
2. अल्प शिक्षित व औसत शिक्षित ट्रांसजेण्डरों के सामाजिक–आर्थिक स्तर में सार्थक अंतर नहीं है।

3. अल्प शिक्षित ग्रामीण व अल्प शिक्षित शहरी ट्रांसजेण्डरों के सामाजिक–आर्थिक स्तर में सार्थक अंतर नहीं है।

4. औसत शिक्षित ग्रामीण व औसत शिक्षित शहरी ट्रांसजेण्डरों के सामाजिक–आर्थिक स्तर में सार्थक अंतर नहीं है।

अध्ययन की परिसीमाएं

1. प्रस्तुत शोध अध्ययन शोधार्थी द्वारा उत्तर प्रदेश के बुंदेलखण्ड क्षेत्र के अंतर्गत क्षेत्र तक ही सीमित रखा गया है।

2. प्रस्तुत शोध अध्ययन में ग्रामीण व शहरी एवं अल्प शिक्षित (कक्षा 1 से 5 तक) व औसत शिक्षित (कक्षा 6 से 12 तक) शिक्षा प्राप्त ट्रांसजेण्डरों का चयन किया गया है।

3. प्रस्तुत शोध अध्ययन में केवल 18 से 40 वर्ष आयु वर्ग के ट्रांसजेण्डरों को शामिल किया गया है।

4. प्रस्तुत शोध अध्ययन में केवल 100 ट्रांसजेण्डरों को लिया गया है।

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन :

शुक्ला, रेखा (2011)'' ने उच्चतर माध्यमिक स्तर पर फर्रुखाबाद जिले के छात्र एवं छात्राओं (कला व विज्ञान वर्ग) के आकांक्षा स्तर, बुद्धिलब्धि एवं सामाजिक–आर्थिक स्तर का अध्ययन किया। परिणाम में विज्ञान वर्ग के छात्र–छात्राओं में शैक्षिक निष्पत्ति की मात्रा साधारण एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के वर्गों की तुलना में उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर के वर्ग में अधिक पायी गयी। इसी तरह कला वर्ग के छात्र–छात्राओं में अधिक पायी गयी।

शर्मा, सरोज कुमार (2012)'' ने प्राथमिक स्तर पर कार्यरत शिक्षकों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति का अध्ययन किया। परिणाम में पुरुष एवं महिला की सामाजिक–आर्थिक स्थिति में अन्तर पाया गया। महिला शिक्षकों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति उच्च पायी गयी। सामान्य जाति के शिक्षकों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति उच्च होती है। हिन्दू एवं मुसलमान शिक्षकों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति में अन्तर नहीं पाया गया।

कुमार, राजेश (2015)'' ने बाल अपराधियों (ग्रामीण व शहरी) बालक व बालिका की सामाजिक–आर्थिक प्रस्थिति का अध्ययन किया। बाल अपराधी बालक व बालिका का सामाजिक–आर्थिक प्रस्थिति का स्तर अलग–अलग होता है। जिसमें बालिकाओं की सामाजिक–आर्थिक प्रस्थिति उच्च होती है। शहरी व ग्रामीण बाल अपराधी बालक व बालिका की सामाजिक–आर्थिक प्रस्थिति का गणना द्वारा टी मान 0.144 जो कि सारणीय मान से कम है। इस आधार पर ग्रामीण व शहरी बाल अपराधी बालक व बालिका की सामाजिक–आर्थिक प्रस्थिति में कोई असमानता नहीं पाई गई।

पाठक, प्रीति (2022)'' ने रुहेलखंड क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता और सामाजिक–आर्थिक स्थिति के अध्ययन के संबंध में शैक्षणिक उपलब्धि का एक अध्ययन किया। विद्यार्थी विभिन्न सामाजिक–आर्थिक स्थिति से सम्बन्ध रखते हैं। निष्कर्षतः अधिकांश छात्रों का सामाजिक–आर्थिक स्तर औसत है। विभिन्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर पाया गया है। माता–पिता की शिक्षा और आय का बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि और सामाजिक–आर्थिक स्तर के बीच महत्वपूर्ण संबंध पाया गया।

श्रीमोई,पोद्दार (2022) ने पश्चिम बंगाल में ट्रांसजेण्डर समुदाय की शिक्षा और सामाजिक आर्थिक परिप्रेक्ष्य का खोजपूर्ण अध्ययन किया। इस अध्ययन हेतु शोधार्थी ने हावड़ा के 30 ट्रांसजेण्डरों का चयन हिमकंदुक न्यादर्श विधि के माध्यम से चयन किया। अध्ययन में पाया कि केवल 3.33 प्रति"ात ट्रांसजण्डर उच्च आर्थिक वर्ग में है। 13.33 प्रति"ात ट्रांसजेण्डर उच्च मध्यम सामाजिक आर्थिक वर्ग में है। 83.33 प्रति"ात ट्रांसजेण्डर निम्न सामाजिक–आर्थिक वर्ग में है। किन्नरों की भौतिक संपति में 16.66 प्रति"ात के अच्छी, 33.3 प्रति"ात के पास औसत, 33.33 प्रति"ात के पास बहुत कम एवं 46.60 प्रति"ात के पास बहुत ही कम भौतिक संपति है। सामाजिक स्थिति के लिए माता–पिता का मेलजोल बहुत जरुरी है। 70 प्रति"ात ट्रांसजेण्डरों के माता–पिता के साथ खराब संबंध, 13.33 प्रति"ात की औसत बातचीत एवं 16.66 प्रति"ात ट्रांसजेण्डरां के बीच अच्छा व्यवहार होता है। ट्रांसजेण्डर की सामाजिक भागीदारी का प्रतिशत 13.55 अच्छी, 30 प्रति"ात की औसत व 56.66 प्रति"ात की खराब है। समायोजन में 93.33

प्रति"ात का सामाजिक समायोजन अच्छा है। ट्रांसजेण्डरों की शिक्षा और सामाजिक–आर्थिक स्थिति के बीच एक मध्यम संबंध है। जिसका मान 0.69 है।

शोध विधि : शोधार्थी ने शोध उद्देश्य की पूर्ति के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है।

प्रतिदर्श विधि– शोधार्थी ने उद्देश्यपूर्ण व प्रासंगिक न्यादर्श विधि का चयन किया है।

उपकरण : शोधार्थी द्वारा आंकड़ों के संकलन करने हेतु स्व–निर्मित ट्रांसजेण्डर सामाजिक–आर्थिक स्तर लिंकर्ट मापनी का प्रयोग किया गया।

आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या :

01. परिकल्पना – ग्रामीण व शहरी ट्रांसजेण्डरों के सामाजिक–आर्थिक स्तर में सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी क्रमांक– 1

ग्रामीण व शहरी ट्रांसजेण्डरों के सामाजिक–आर्थिक स्तर से सम्बन्धित मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात।

वर्ग	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान में अन्तर	क्रांतिक अनुपात	स्वतंत्रता के अंश	सार्थकता स्तर
ग्रामीण ट्रांसजेण्डर	50	91.1	8.718	6.18	2.91	98	.05 स्तर पर सार्थक
शहरी ट्रांसजेण्डर	50	97.2	12.18				

सारणी क्रमांक 1 स स्पष्ट है कि ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के ट्रासजेण्डरों के सामाजिक–आर्थिक स्तर के मध्यमानों के मध्य क्रान्तिक अनुपात का परिगणित मान 2.91 प्राप्त हुआ, जो df = 98 पर मानकीकृत सारणो मान 1.98 से अधिक है जो कि .05 स्तर पर सार्थक है। अतः ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के ट्रासजेण्डरों के सामाजिक–आर्थिक स्तर के मध्य सार्थक अन्तर है।

ग्रामीण एव शहरी क्षेत्र के ट्रांसजेण्डरों के सामाजिक–आर्थिक स्तर के अंकों का मध्यमान क्रमशः 91.1 व 97.2 तथा मानक विचलन क्रमशः 8.718 व 12.18 है। मध्यमानों के अन्तर से स्पष्ट है कि ग्रामीण ट्रांसजेण्डरों का मध्यमान, शहरी ट्रांसजेण्डरों की तुलना में 6.18 कम है अथात शहरी क्षेत्र के ट्रांसजेण्डरों का ग्रामीण क्षेत्र के ट्रांसजेण्डरों की अपेक्षा सामाजिक–आर्थिक स्तर अच्छा है। अतः हमारी शून्य परिकल्पना, ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के ट्रांसजेण्डरों के सामाजिक–आर्थिक स्तर मे सार्थक अन्तर नहीं है।, अस्वीकृत और शोध परिकल्पना स्वीकृत है।

02. <u>परिकल्पना</u> – अल्प शिक्षित व औसत शिक्षित ट्रांसजेण्डरों के सामाजिक–आर्थिक स्तर में सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी क्रमांक– 2

अल्प शिक्षित व औसत शिक्षित ट्रांसजेण्डरों के सामाजिक–आर्थिक स्तर से सम्बन्धित मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात।

ट्रांसजेण्डर	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान में अन्तर	क्रांतिक अनुपात	स्वतंत्रता के अंश	सार्थकता स्तर
अल्प शिक्षित	50	91.4	11.64	5.42	2.533	98	.05 स्तर पर सार्थक
औसत शिक्षित	50	96.9	9.657				

सारणी क्रमांक 2 स स्पष्ट है कि अल्प शिक्षित व औसत शिक्षित ट्रासजेण्डरों के सामाजिक–आर्थिक स्तर के मध्यमानों के मध्य क्रान्तिक अनुपात का परिगणित मान 2.533 प्राप्त हुआ, जो $df = 98$ पर मानकीकृत सारणो मान 1.98 से अधिक है जो कि .05 स्तर पर सार्थक है। अतः अल्प शिक्षित व औसत शिक्षित ट्रासजेण्डरों के सामाजिक–आर्थिक स्तर के मध्य सार्थक अन्तर है।

अल्प शिक्षित व औसत शिक्षित ट्रांसजेण्डरों के सामाजिक–आर्थिक स्तर के अंकों का मध्यमान क्रमशः 91.4 व 96.9 तथा मानक विचलन क्रमशः 11.64 व 9.657 है। मध्यमानों के अन्तर से स्पष्ट है कि अल्प शिक्षित ट्रांसजेण्डरों का मध्यमान, औसत शिक्षित ट्रांसजेण्डरों की तुलना में 5.42 कम है अथात औसत शिक्षित ट्रांसजेण्डरों का अल्प शिक्षित ट्रांसजेण्डरों की अपेक्षा सामाजिक–आर्थिक स्तर अच्छा है। अतः हमारी शून्य परिकल्पना, अल्प शिक्षित व औसत शिक्षित ट्रांसजेण्डरों के सामाजिक–आर्थिक स्तर मे सार्थक अन्तर नहीं है, अस्वीकृत और शोध परिकल्पना स्वीकृत है।

03. <u>परिकल्पना</u> – अल्प शिक्षित ग्रामीण व अल्प शिक्षित शहरी ट्रांसजेण्डरों की सामाजिक–आर्थिक स्तर में सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी क्रमांक– 3

अल्प शिक्षित ग्रामीण व अल्प शिक्षित शहरी ट्रांसजेण्डरों की सामाजिक–आर्थिक स्तर से सम्बन्धित मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–अनुपात।

ट्रांसजेण्डर	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान में अन्तर	टी–अनुपात	स्वतंत्रता के अंश	सार्थकता स्तर
अल्प शिक्षित ग्रामीण	25	88.3	8.19	6.24	1.909	48	.05 स्तर पर असार्थक
अल्प शिक्षित शहरी	25	94.6	13.8				

सारणी क्रमांक 3 स स्पष्ट है कि अल्प शिक्षित ग्रामीण व अल्प शिक्षित शहरी ट्रासजेण्डरों के सामाजिक–आर्थिक स्तर के मध्यमानों के मध्य टी–अनुपात का परिगणित मान 1.909 प्राप्त हुआ, जो df = 48 पर मानकीकृत सारणो मान 2.01 से कम है, जो कि .05 स्तर पर

असार्थक है। अतः अल्प शिक्षित ग्रामीण व अल्प शिक्षित शहरी ट्रासजेण्डरों के सामाजिक–आर्थिक स्तर के मध्य सार्थक अन्तर नहीं है।

अल्प शिक्षित ग्रामीण व अल्प शिक्षित शहरी ट्रांसजेण्डरों के सामाजिक–आर्थिक स्तर के अंकों का मध्यमान क्रमशः 88.3 व 94.6 तथा मानक विचलन क्रमशः 8.19 व 13.8 है। मध्यमानों के अन्तर से स्पष्ट है कि अल्प शिक्षित ग्रामीण ट्रांसजेण्डरों का मध्यमान अल्प शिक्षित शहरी ट्रांसजेण्डरों की तुलना में 6.24 कम है। मध्यमानों की सार्थकता ज्ञात करने पर अंतर नहीं पाया गया, अतः हमारी शून्य परिकल्पना, अल्प शिक्षित ग्रामीण व अल्प शिक्षित शहरी क्षेत्र के ट्रांसजेण्डरों के सामाजिक–आर्थिक स्तर मे सार्थक अन्तर नहीं है, स्वीकृत और शोध परिकल्पना अस्वीकृत है।

04. परिकल्पना – औसत शिक्षित ग्रामीण व औसत शिक्षित शहरी ट्रांसजेण्डरों की सामाजिक–आर्थिक स्तर में सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी क्रमांक– 4

औसत शिक्षित ग्रामीण व औसत शिक्षित शहरी ट्रांसजेण्डरों के सामाजिक–आर्थिक स्तर से सम्बन्धित मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–अनुपात।

ट्रांसजेण्डर	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान में अन्तर	टी–अनुपात	स्वतंत्रता के अंश	सार्थकता स्तर
औसत शिक्षित ग्रामीण	25	93.8	8.514	6.12	2.293	48	.05 स्तर पर सार्थक
औसत शिक्षित शहरी	25	99.9	9.92				

सारणी क्रमांक 4 स स्पष्ट है कि औसत शिक्षित ग्रामीण व औसत शिक्षित शहरी ट्रासजेण्डरों की सामाजिक–आर्थिक स्तर के मध्यमानों के मध्य टी–अनुपात का परिगणित मान 2.493

प्राप्त हुआ, जो $df = 48$ पर मानकीकृत सारणो मान 2.01 से अधिक है, जो कि .05 स्तर पर सार्थक है। अतः औसत शिक्षित ग्रामीण व औसत शिक्षित शहरी ट्रासजेण्डरों की सामाजिक–आर्थिक स्तर के मध्य सार्थक अन्तर है।

औसत शिक्षित ग्रामीण व औसत शिक्षित शहरी ट्रांसजेण्डरों की सामाजिक–आर्थिक स्तर के अंकों का मध्यमान क्रमशः 93.8 व 99.9 तथा मानक विचलन क्रमशः 8.51 व 9.92 है। मध्यमानों के अन्तर से स्पष्ट है कि औसत शिक्षित ग्रामीण ट्रांसजेण्डरों का मध्यमान औसत शिक्षित शहरी ट्रांसजेण्डरों की तुलना में 6.12 कम है। अर्थात औसत शिक्षित शहरी क्षेत्र के ट्रांसजेण्डरों में औसत शिक्षित ग्रामीण ट्रांसजेण्डरों की अपेक्षा सामाजिक–आर्थिक स्तर अच्छा है। अतः हमारी शून्य परिकल्पना, औसत शिक्षित ग्रामीण व औसत शिक्षित शहरी क्षेत्र के ट्रांसजेण्डरों की शैक्षिक अभिप्रेरणा मे सार्थक अन्तर नहीं है, अस्वीकृत और शोध परिकल्पना स्वीकृत हैं।

शोध निष्कष एवं सुझाव –

1. ग्रामीण एवं शहरी ट्रांसजेण्डरों की सामाजिक–आर्थिक स्तर का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के ट्रांसजण्डरों के सामाजिक–आर्थिक स्तर के मध्य सार्थक अतर है। शहरी क्षेत्र के ट्रांसजेण्डरों का ग्रामीण क्षेत्र के ट्रांसजेण्डरों की अपेक्षा सामाजिक–आर्थिक स्तर अच्छा है।

2. अल्प शिक्षित व औसत शिक्षित ट्रांसजेण्डरों की सामाजिक–आर्थिक स्तर का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि अल्पशिक्षित व औसत शिक्षित ट्रांसजेण्डरों के सामाजिक–आर्थिक स्तर के मध्य सार्थक अंतर है। औसत शिक्षित ट्रांसजेण्डरों का अल्प शिक्षित ट्रांसजेण्डरों की अपेक्षा सामाजिक–आर्थिक स्तर अच्छा है।

3. अल्पशिक्षित ग्रामीण व अल्पशिक्षित शहरी ट्रांसजेण्डरों के सामाजिक–आर्थिक स्तर का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि अल्प शिक्षित ग्रामीण व अल्प शिक्षित शहरी ट्रासजेण्डरों के

सामाजिक–आर्थिक स्तर के मध्य सार्थक अन्तर नहीं है। मध्यमानों की सार्थकता ज्ञात करने पर अंतर नहीं पाया गया।

4. औसत शिक्षित ग्रामीण व औसत शिक्षित शहरी ट्रांसजेण्डरों की सामाजिक–आर्थिक स्तर का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि औसत शिक्षित ग्रामीण व औसत शिक्षित शहरी ट्रांसजेण्डरों के सामाजिक–आर्थिक स्तर के मध्य सार्थक अंतर है। औसत शिक्षित शहरी क्षेत्र के ट्रांसजेण्डरों में औसत शिक्षित ग्रामीण ट्रांसजेण्डरों की अपेक्षा सामाजिक–आर्थिक स्तर अच्छा है।

सुझावः–

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। जो समाज के नियमों, विश्वासों, मान्यताओं आदि का पालन करता है। जिसके आधार पर सामाजिक–आर्थिक विकास करता है। इसी तरह समाज में ट्रांसजेण्डर समुदाय का वर्ग है जिसे न तो समाज ने अपनाया न ही परिवार ने। यह वर्ग अपनी सामाजिक व आर्थिक स्थिति को बेहतर बनाने के लिए संघर्षरत है। इनके प्रति समाज व परिवार को दृष्टिकोण बदलने की आवश्यकता है। इन्हें भी अपनी सामाजिक व पारिवारिक पहचान मिलना चाहिए, जिससे वंचित कर दिया। समाज व परिवार का दोहरा व्यवहार इनके भविष्य को अंधकारमय करता है। ट्रांसजेण्डर समुदाय क लिए शिक्षा, अधिकार, समता, रोजगार एवं अवसरों की समानता आदि की व्यवस्था की जानी है। साथ ही ग्रामीण व शहरी क्षेत्र में जागरुकता कार्यक्रम चलाये जायें । ट्रांसजेण्डरों से जुड़े परिवारों व माता–पिता को आवश्यक परामर्श व सुझाव दिये जायें, जिससे इनके प्रति सकारात्मक व्यवहार किया जाय। जिससे ट्रांसजेण्डर समुदाय अपनी सामाजिक–आर्थिक पहचान बनाकर राष्ट्र क विकास में अपना सहयोग प्रदान कर सके।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

लाल, रमन बिहारी एवं सुनीता पलोड़ (2009); शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय परिदृश्य, मेरठ : आर. लाल बुक डिपो, पृष्ठ 146–151.

सिंह, अरुण कुमार (2009); मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियॉ, नई दिल्ली, मोतीदास बनारसीदास, पृष्ठ 486–493,

शुक्ला, रेखा (2011); उच्चतर माध्यमिक स्तर पर फर्रुखाबाद जिले के छात्र एवं छात्राओं के आकांक्षा स्तर, बुद्धिलब्धि एवं सामाजिक–आर्थिक स्तर का उनकी शैक्षिक निष्पत्ति पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन, शिक्षाशास्त्र में पी–एच० डी० उपाधि हेतु प्रस्तुत अनुसंधान अध्ययन, आगरा, डॉ. बी० आर० अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा, पृष्ठ सं०–167–168।

सिंह, अरुण कुमार (2012); शिक्षा मनोविज्ञान, नई दिल्ली, भारती भवन (पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स), पृष्ठ) 143–154,

शर्मा, सरोज कुमार (2012); प्राथमिक स्तर पर कार्यरत शिक्षकों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति तथा उनके जीवन मूल्य का एक अध्ययन शिक्षा संकाय में पी–एच० डी० उपाधि हेतु प्रस्तुत अनुसंधान प्रबंध जौनपुर, वी० ब० सिंह पूवाचल विश्वविद्यालय, जौनपुर पृष्ठ सं०– 151–154।

कुमार, राजेश (2015); बाल अपराधियों के उन्नयन हेतु किये गए शैक्षिक प्रयास, उनकी सामाजिक आर्थिक प्रस्थिति एवं महत्वाकांक्षाओं का अध्ययन, शिक्षाशास्त्र में पी– एच० डी० उपाधि हेतु प्रस्तुत अनुसंधान प्रबंध वाराणसी, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय कमच्छा, वाराणसी, पृष्ठ सं०– 110–114।

भार्मा, आर० ए० (2018), शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक मूल आधार, आर० लाल बुक डिपो, मेरठ, पृष्ठ सं०– 675–684।

राम बिंदा, कुमारी संजू (2020); सरकारी विद्यालयों के बच्चों के शैक्षणिक विकास में सामाजिक–आर्थिक स्थिति का प्रभाव, International Journal of Research in Social Sciences vol. 10 Issue 02 feb. 2020 Online ISSN : 2249-2496 Page no. 260 -277

मोहद, स्वाब (2021); उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति का मानसिक स्वास्थ्य के संदर्भ में अध्ययन, International Journal of Applied Research 2021: 7(a): page no.252-255 .

Pathak, Preeti (2022); A study of Academic Achievement in Relation to study Involvement Emotional Intelligence and socio economic status of Senior Secondary students of Rohilkhand Region, for the degree of Doctor of Philosophy in Education, Bariely, Mahatma Jyotiba Phule Rohilkhand university, Bariely, Page no- 142-150.

श्री मोई, पोद्दार (2022); पश्चिम बंगाल में ट्रांसजेण्डर समुदाय की शिक्षा और सामाजिक–आर्थिक परिप्रेक्ष्य का खोजपूर्ण अध्ययन, शिक्षाशास्त्र में पी– एच० डी० उपाधि हेतु, प्रस्तुत अनुसंधान प्रबंध पश्चिम बंगाल, उत्कल विश्वविद्यालय पश्चिम बंगाल पृष्ठ सं० – 57,58, 154–156 ।

गोस्वामी, नेहा, लिंग, विद्यालय और समाज, मध्य प्रदश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय – भोपाल, पृष्ठ सं० –158.

http://hi.m.wikipedia.org/wiki/%EO%A4

Manish Kumar Verma
Mail Id- manis1dec@gmail.com
Mobile No. 9026260023